डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 29-05-2020

विषय- द्वितीय पत्र (श्रीमद्भगवद्गीता)

ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते । श्रद्दधाना मत्परमा भक्ता स्तेऽतीव मे प्रिया:।।20।।

अर्थ- परंतु जो श्रद्धा युक्त पुरुष मेरे पारायण होकर इस ऊपर कहे हुए धर्ममय अमृत को निष्काम प्रेम भाव से सेवन करते हैं, वे भक्त मुझको अतिशय प्रिय है ।।20।।

प्रश्न -यहां 'तु' पद के प्रयोग का क्या उद्देश्य है?

उत्तर- तेरहवें से लेकर उन्नीसवें श्लोक तक भगवान् को प्राप्त सिद्ध भक्तों के लक्षणों का वर्णन है और इस श्लोक में उत्तम साधक भक्तों की प्रशंसा की गयी है ,जो इन सिद्धों से भिन्न है और सिद्ध भक्तों के इन लक्षणों को आदर्श मानकर उनका सेवन करते हैं। यही भेद दिखाने के लिए 'तु' पद का प्रयोग किया गया है ।

प्रश्न- आयुक्त भगवतपरायण पुरुष किसे कहते हैं

उत्तर- सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान् भगवान् के अवतारों, वचनों एवं उनके गुण, प्रभाव ऐश्वर्य और चरित्रादि में जो प्रत्यक्ष के सदृश सम्मान पूर्वक विश्वास रखता है, वह श्रद्धावान् है। परम प्रेमी और परम दयालु भगवान् को ही परम गति, परम आश्रय एवं अपने प्राणों के आधार, सर्वस्वमान कर उन्हीं पर निर्भर और उनके किए हुए विधान में प्रसन्न रहने वाले को भगवत् परायण पुरुष कहते हैं।

प्रश्न- उपर्युक्त सात श्लोकों में वर्णित भागवत् भक्तों के लक्षणों को यहां धर्ममय अमृत के नाम से कहने का क्या अभिप्राय है?

उत्तर- भगवत् भक्तों के उपर्युक्त लक्षण ही वस्तुतः मानव धर्म का सच्चा स्वरूप है। इन्हीं के पालन में मनुष्य - जन्म की सार्थकता है, क्योंकि इनके पालन से साधक सदा के लिए मृत्यु के पंजे से छूट जाता है और उसे अमृत स्वरूप भगवान् की प्राप्ति हो जाती है। इसी भाव को स्पष्ट समझाने के लिए यहां इस लक्षण समुदाय का नाम 'धर्ममय अमृत' रखा गया है।

प्रश्न- यहां 'पर्युपासते' का क्या अभिप्राय है?

उत्तर- भली-भांति तत्पर होकर निष्काम प्रेम भाव से इन उपर्युक्त लक्षणों का श्रद्धापूर्वक सदा-सर्वदा सेवन करना, यही 'पर्युपासते' का अभिप्राय है।

प्रश्न- पहले सात लोको में भगवत् प्राप्त सिद्ध भक्तों के लक्षणों का वर्णन करते हुए उनको तो भगवान् ने अपना प्रिय भक्त बतलाया और इस श्लोक में जो सिद्ध नहीं है ,परंतु इन लक्षणों की उपासना करने वाले साधक भक्त हैं, उनको 'अतिशय प्रिय' कहा, इसमें क्या रहस्य है?

उत्तर -जिन सिद्ध भक्तों को भगवान् की प्राप्ति हो चुकी है उनमें तो उपर्युक्त लक्षण स्वाभाविक ही रहते हैं और भगवान् के साथ उनका नित्य तादात्म्य- संबंध हो जाता है। इसलिए उनमें इन गुणों का होना कोई बहुत बड़ी बात नहीं है । परंतु जिन एक निष्ठ साधक भक्तों को भगवान् के प्रत्यक्ष दर्शन नहीं हुए हैं, तो भी वे भगवान् पर विश्वास करके परम श्रद्धा के साथ तन, मन, धन सर्वस्व भगवान् के अर्पण करके उन्हीं के परायण हो जाते हैं तथा भगवान् के दर्शनों के लिए निरंतर उन्ही का निष्काम भाव से प्रेम पूर्वक चिंतन करते रहते हैं और सतत चेष्टा करके उपर्युक्त लक्षणों के अनुसार ही अपना जीवन बिताना चाहते हैं। बिना प्रत्यक्ष दर्शन हुए भी केवल विश्वास पर उनका इतना निर्भर हो जाना विशेष महत्त्व की बात है। इसीलिए भगवान को वे विशेष प्रिय होते हैं । ऐसे प्रेमी भक्तों को भगवान अपना नत्य संग प्रदान करके जब तक संतुष्ट नहीं कर देते, तब तक वे उनके ऋणी ही बने रहते हैं- ऐसी भगवान् की मान्यता है, भगवान् का उन्हें सिद्ध भक्तों की अपेक्षा भी 'अतिशय प्रिय' कहना उचित ही है।